सही बातें
मरहम

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

प्रकाशक

समर्पण समूह

जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

संपादन / सहयोग

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी मुनिराज

सहजानंदी श्रमण सहजसागर जी मुनिराज

कृति का नाम

सही बातें

मरहम

संस्करण

2023 : 1008 प्रतियाँ

प्राप्ति स्थान

भोपाल : 91790-50222

जबलपुर : 98276-07171

इन्दौर : 98260-10104

इन्दौर : 94253-16840

भीलवाड़ा : 63766-49881

आकल्पन एवं मुद्रण

डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर

मो. 98260-14047

शुभाशीष...

वस्तु स्वभाव में परिणामी एवं अपरिणामी है। द्रव्य-दृष्टि से अपरिणामी व पर्याय दृष्टि से परिणामी, पर जो इस सत्य को नहीं जानता वह दूसरे के लिए बोलता है - अमुक व्यक्ति बदल गया, जबकि वह स्वयं भी बदला है। एक-ही समय में परिणाम व अपरिणाम धर्म विद्यमान रहता है, इस **सही बात** को जो जानता है, वह सत्यज्ञाता पर में दोषों का अन्वेषण नहीं करता है, अपितु वस्तु के वस्तुत्व को सम्यक् जानकर मध्यस्थ हो जाता है।

इसी भावना से ओत-प्रोत **तत्त्वान्वेषी श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी ने "सही बातें"** नामक कृति का सृजन कर वागीश्वरी के कोष को वर्धमान किया है। वे इसी प्रकार सम्यक् श्रुताभ्यास पूर्वक साहित्य-सृजन कर के संस्कृति का संवर्धन करें, यही शुभाशीष है।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

शताब्दी देशनाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी मुनिराज

मेरी बात-सही बात

अनेकों चिंतकों ने अपने अभिनव, अभिजात और आत्मोन्मुखी चिंतन से इस भारतीय तत्त्वमनीषा के वाङ्मय को सुसंवर्धित किया है। वही चिंतन समीचीन-चिंतन कहलाता है, जो सिद्धांत, तर्क और पूर्वाचार्यों की कथनी से मेल खाता है।

हर व्यक्ति की बातें सही नहीं होती और हर व्यक्ति की बातें गलत भी नहीं होती, कई बार समझने का नज़रिया भी गलत होता है। इस कृति के सृजन का हेतु ऐसे ही कुछ गलत नज़रियों को सही करना है।

विश्ववंद्य प्रभु वर्धमानस्वामी के अहिंसामय सत्यार्थ सिद्धांत जन सामान्य तक पहुँचाने के लिये शब्द और भाषा दोनों ही जनपद संबंधी होना अनिवार्य है। इसी कारण से यह सृजन गुरुप्रसाद, आगमाध्ययन, स्वानुभव और स्वयुक्ति के साथ-साथ सुगम शब्द और भाषा से मैंने अभिसिंचित किया है।

आशा है लघुकृत्य के रूप में प्रस्तुत मेरी कुछ **सही बातें** चिरकाल से प्रचलित गलत बातों को चिरकाल तक सही रखने में सहायक बनेगी।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

कोई भी कभी भी
किसी को भी
धोखा नहीं देता,
असल में
धोखा देनेवाली
हमारी उम्मीदें होती हैं
और हम व्यर्थ ही
दूसरों को दोष देते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया को देखने के लिये
सारे संसार में
दौड़ना पड़ता है
और
परमात्मा को देखने के लिये
खुद में ही
स्थिर होना पड़ता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

व्यापार
उन्हीं का अच्छा चलता है
जिनका व्यवहार
अच्छा होता है,
इसलिये
अच्छे व्यापार के लिये
अच्छे माल के साथ-साथ
अच्छे व्यवहार की भी जरूरत है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी ज़िंदगी को
कुछ ऐसा बनाइये
जब आपसे कोई मिले
तो खुशी के आँसू निकलें
और
जब न मिले
तो गम के आँसू निकलें...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मेरे मित्रो !
ज़िंदगी को
कुछ ऐसे जीना कि
ज़िन्दा होने पर
लोग मिलने की फरियाद करें
और
मरने पर
हर वक्त याद करें ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सत्य बोलना
कोई विशेष बात नहीं है,
विशेष बात तो
झूठ बोलना है ;
सत्य न तो विशेष है
न ही समान्य है
सत्य तो सत्य ही है ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

महत्त्वपूर्ण सोना नहीं,
महत्त्वपूर्ण मिट्टी नहीं,
महत्त्वपूर्ण धन भी नहीं,
महत्त्वपूर्ण तो आवश्यकता है;
अगर
आवश्यकता नहीं है
तो सोना भी मिट्टी है
और
आवश्यकता है
तो मिट्टी भी सोना है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिन लोगों की फितरत
मुस्कुराने की है
उन्हें
कितना ही परेशान किया जाये,
पर
वे परेशान नहीं होते;
क्योंकि
परेशानी मिटाने की
सबसे अच्छी दवा मुस्कुराहट है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

टेड़े लोगों को
आप सीधा नहीं कर सकते,
अगर मान लो
करते भी हैं
तो थोड़ा बहुत टेड़ापन
बरकरार रहता है,
उनकी स्थिति
उस सीधी कील के समान होती है
जो पहले टेड़ी थी;
वे सीधे तभी होते हैं
जब वे चाहते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही बातें
मरहम

दुनिया में ऐसे लोग
बहुत ही कम होते हैं
जो अपनी हुनर की
कद्र करते हैं,
ज़्यादातर लोग
दूसरों की हुनर देखने में ही
अपनी हुनर बर्बाद कर देते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मेरा मानना है–
दरिद्र वह नहीं
जिसके पास धन नहीं,
बल्कि
दरिद्र वह है
जिसके पास तृष्णा है,
अगर दरिद्रता नहीं बढ़ाना हो
तो धन बढ़ायें या न बढ़ायें;
पर
तृष्णा कभी न बढ़ायें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मैंने साधना के
बहुत आयामों पर
चिंतन और अनुभवन किया,
मगर
मन में समता
और
मन की संतुष्टि;
ये दो ही मुझे
सबसे बड़ी साधना लगती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सामूहिक भजन
और
सामूहिक भोजन से
पारस्परिक प्रेम बढ़ता है,
यहाँ तक कि
सामाजिक एकता के लिये भी
सामूहिक भजन
और
सामूहिक भोजन
एक अच्छा उपाय है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

इस दुनिया में
बोलते तो बहुत लोग हैं,
पर
चलती उन्हीं की है
जिसका वक्त होता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

समय कभी भी
किसी को भी नहीं छोड़ता है,
वो अच्छे-बुरे
दोनों दिन दिखा देता है,
महलों में
सोनेवालों को भी
रोड़ पर सुला देता है
और
रोड़ पर रहने वालों को भी
महल दिला देता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप
सहना नहीं जानते
तो रोना सीख लीजिये,
ध्यान रखना-
जो लोग
सहना नहीं जानते
उनके पास
कोई और विकल्प ही नहीं है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही बातें
मरहम

अपनी ज़िंदगी के बारे में
जानने की जिज्ञासा तो जरूर रखें,
मगर
पूरी ज़िंदगी के बारे में
जानने की कोशिश न करें,
क्योंकि
बहुत सारी बातें ऐसी हैं
जो आप नहीं जान सकते हैं;
वह तो सिर्फ
भाग्य जानता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मुझे इस दुनिया में
ज़्यादातर लोग
धन कमाते नज़र आते हैं,
पर
विश्वास जो सबसे कीमती है
उसे लोग
कमाना भूल जाते हैं;
शायद इसलिये
धनवान तो अनेकों हैं
पर
विश्वास के योग्य कुछ ही हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

असफल होने पर भी
इरादों और हिम्मत को
छोटा न करें,
इरादों को बनाये रखें
और
हिम्मत को बढ़ाते रहें;
सफलता आपके सामने
जरूर घुटने टेकेगी ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो स्वयं बनते हैं,
मगर
तोड़ने से भी नहीं टूटते
मैं तो उन्हें ही संबंध मानता हूँ,
जो संबंध टूटें
वो सच्चे संबंध नहीं
मज़बूरी के संबंध हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

इंसान से
प्यार करना छोड़कर
भगवान से
प्यार करना चालू कर दो,
इंसान से किया गया प्यार
आपको कमज़ोर बनाता है ;
मगर
भगवान से किया गया प्यार
आपको ताकतवर बनाता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

शब्दों के
न तो हाथ–पाँव होते हैं,
न ही जड़ें,
न ही उनके पास शस्त्र होते हैं,
फिर भी
शब्दों की ताकत देखिये;
कुछ शब्द
मरहम का काम करते हैं
और
कुछ शब्द मारने का ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसे
बिना पानी के
न तो वृक्ष बचेगा
न ही फल मिलेगा,
वैसे ही
बिना समर्पण के
न तो रिश्ता बचेगा
न ही प्रेम मिलेगा;
अगर आपको
प्रेम चाहिये है
तो समर्पण करना ही होगा...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अच्छे संबंधों की जड़ें
पैसे खर्च करने से
मज़बूत नहीं होती,
उन्हें मज़बूत करने के लिये
आपको अपनी सबसे कीमती चीज़
खर्च करनी पड़ेगी
और वो है
समय...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कुछ पाना है
तो कुछ–न–कुछ
छोड़ना भी पड़ेगा,
ये मेरा नहीं
प्रकृति का नियम है;
साँस को ही ले लीजिये
जब आप साँस लेते हैं
तो उसके बदले में
साँस छोड़ना भी पड़ती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

समझदार लोगों की
बातों को समझना
सबसे बड़ी समझदारी है,
यह बात
नासमझों को समझ नहीं आती है;
क्योंकि
नासमझ लोग तो
समझदारों को भी
नासमझ ही मानते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपका दिल
पत्थर का है
तो आप
कितनी ही कोशिश कर लें,
परन्तु
आप किसी के दिल को
नहीं जीत सकते हैं;
क्योंकि
पत्थर से तो तोड़ा जाता है
जीता नहीं जाता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपना समय
निन्दा में नहीं
मेहनत में लगाइये,
ध्यान रखें -
समय
निन्दा करने से नहीं
मेहनत करने से बदलेगा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब आप
किसी को कष्ट देते हैं
तब भी आँसू निकलते हैं
और
जब आप
किसी की कद्र करते हैं
तब भी आँसू निकलते हैं,
जब
आँसुओं को निकलना ही है,
तो क्यों न?
कद्र करके निकाले जायें...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप जब भी सच बोलें
तो उसे क्रोध से नहीं
शांत भाव से प्रस्तुत करें,
क्योंकि
क्रोध में बोले गये सच को भी
लोग सच नहीं मानते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

इस दुनिया में
लोग बड़े ही अज़ीब होते हैं,
पहले
भगवान का नाम लेकर
उनसे माँगते हैं,
फिर भगवान पर ही
अपना नाम लिखाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर
आपका भाग्य कमज़ोर है,
तो अपनी मेहनत को
मज़बूत बनाइये,
क्योंकि
मज़बूत मेहनत से ही
कमज़ोर भाग्य सँवरता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

भले ही
भगवान की मूरत पत्थर की है
और
उसमें दिल भी नहीं है,
पर
उस मूरत में देखते ही
पत्थर दिल इंसान भी
पिघल जाते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब कोई आपको
या
आपकी बात को
नज़रअंदाज कर दे,
तो उसके बारे में
बुरा मत सोचिये,
बल्कि यह सोचिये
महँगी चीज़ों को लोग
नज़रअंदाज ही करते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब आप
मुसीबत में फँस जाते हैं
तब सबसे पहले आपको
उन्हीं की नसीहतें याद आती हैं,
जो लोग आपको
मुसीबत लगते थे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आज के ज़माने में
एकता का पाठ
झूठे लोगों ने
अच्छे से सीख लिया है,
अकसर वे
इकट्ठे होकर
मज़बूत लोहे की तरह
सच को भी तोड़ देते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो कुछ
आप अपने लिये करते हैं
दुनिया उसे याद नहीं रखती
और
जो कुछ
आप दूसरों के लिये करते हैं
दुनिया उसे
कभी नहीं भूल पाती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हर किसी से मिलने पर
खुशी नहीं मिलती,
मगर
जिससे मिलने पर
खुशी मिलती है;
उसी से बिछड़ने का
गम भी मिलता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

भीड़ में खड़े न होकर
भीड़ से हटके
दुनिया को देखिये,
काम बने या न बने
पर
पहचान जरूर बनती है
और
पहचान बनते ही
अधूरे काम पूरे हो जाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मित्रो !
कभी भी
गरम मत होना,
क्योंकि
गरम होने पर
आप गलतियाँ कर बैठते हैं;
हमेशा ठंडे रहिये,
ठंडे रहने पर
आप गलतियाँ समझ लेते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब भी आप गरम हाते हैं
तब आप लोहे की तरह
कमज़ोर हो जाते हैं,
जब तक लोहा
गरम रहता है,
कमज़ोर रहता है
ठंडा होते ही
मज़बूत हो जाता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दूसरों के
मदद माँगने पर
हर कोई यही कहता है
समय नहीं है,
पर
आश्चर्य तो देखिये
दूसरों के
काम बिगाड़ने के लिये
हर किसी के पास समय है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

शारीरिक व्यायाम से
आपका शरीर सुन्दर होता है,
पर
पढ़ने-लिखने से
आपका दिमाग सुन्दर होता है;
इसलिये
पढ़ना-लिखना भी
एक व्यायाम ही है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप तभी हारते हैं
जब आपकी
उम्मीदें हारती हैं,
अगर
उम्मीदें ज़िन्दा हैं
तो आपकी
जीत की आशा भी ज़िन्दा है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मेरा मानना है-
जब तक आप ज़िन्दा रहें
अपने दम पर
ज़िन्दगी को जीना,
क्योंकि
दूसरों के दम पर तो
मरने के बाद ही
जाया जाता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने किये की सफाई देना
समझदारी नहीं है,
जिसे आप पर विश्वास है
उसे सफाई देने से
कोई मतलब नहीं है
और
जिसे विश्वास नहीं है
वो आपकी सफाई
कभी मानेगा नहीं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप
उन्हें ही धोखा दे पाते हैं,
जो आप पर
विश्वास करते हैं
और
धोखा देकर आप
सबसे खोटा काम करते हैं
वह है ''विश्वासघात''...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हर हसी के पीछे
एक दर्द होता है
और
हर गुस्से के पीछे
एक प्यार होता है,
पर
उस दर्द को
उस प्यार को
वो ही पहचान पाते हैं,
जो आपसे ज़्यादा
आपके दिल को पहचानते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज़िन्दगी का आनंद
उसी को आता है
जिसने अपनी
इच्छाओं को मार दिया हो,
दो ही बातें हो सकती हैं
या तो आप
इच्छाओं को मार दें;
नहीं तो इच्छायें
आपको मार देंगी ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

गिरना–उठना
ज़िन्दगी इसी का नाम है,
मगर
गिरना और पीछे हट जाना
ये तो कायरों का काम है,
आप क्या करते हैं
ये तो मैं नहीं जानता हूँ;
पर
ज़िन्दगी कैसे जी जाती है
ये मैं जरूर जानता हूँ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो बचपन में
आपको रोने नहीं देते थे,
उन माता-पिता के प्रति
आपका सिर्फ यही फर्ज है कि-
आपके कारण
वे कभी न रो पायें;
तभी आप संतान हैं
अन्यथा समझ लेना
आप लड़-के हैं ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

समस्याओं को आप
लकड़ी में लगी
दीमक के समान ही मानना,
इसलिये
समस्यायें
चाहे आपकी हों
या आपके मित्रों की
उनका हल
शीघ्र से शीघ्र निकालना चाहिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अकसर आप
उनकी चिंता ज़्यादा करते हैं
जो आपकी चिंता
कभी नहीं करते,
शायद
इसी गलती के कारण
आप कुछ ऐसे अपनों को
खो बैठते हैं;
जो आपकी ज़िन्दगी के लिये
सचमुच जरूरी हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

इस दुनिया में
कोई किसी के लिये नहीं रोता है,
हर कोई
राग के लिये ही रोता है;
ये बात मुझे
मुर्दे ने सिखाई है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब तक आपसे राग है
लोग आपके पास हैं,
राग हटते ही
आप अकेले हैं
और
लोग किसी और के पास हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ
व्यावहारिक ज्ञान भी
बहुत आवश्यक है,
पढ़ाई भले ही कमज़ोर हो
परन्तु व्यावहारिक ज्ञान
कमज़ोर नहीं होना चाहिये,
पढ़ाई
आने वाली विपत्ति से
आपकी रक्षा नहीं कर सकती,
यह काम तो
व्यावहारिक ज्ञान ही कर सकता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी भी काम को
करने से पहले
उसके आगे-पीछे का विचार
अवश्य करना चाहिये,
इसीलिये तो कहा है-
बिना विचारे जो करे
सो पाछे पछताये,
काम बिगाड़े आपनो
जग में होत हसाये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब कोई
आपकी शरण में आये
तो उसे दुत्कारें न,
अपितु
उसकी रक्षा करें;
क्योंकि
हम नहीं जानते
कब कौन, किस काम आ जायेगा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज्ञानी जन
कुटिल व्यक्ति की
संगति तो छोड़ो
उसकी छाया से भी दूर रहते हैं,
लेकिन
अज्ञानी जन
उसकी संगति में ही लीन रहते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी स्वतंत्रता के साथ
सुरक्षा का भी ध्यान रखें,
क्योंकि
जब आप सुरक्षित रहेंगे
तब ही आप
स्वतंत्रता का आनंद लूट पायेंगे ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुर्जनों से
कभी भी मित्रता न करें,
भले ही वह
मित्रता की सौगन्ध
क्यों न खा ले,
क्योंकि
साँप कभी भी
सीधा नहीं चलता...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सर्प से मित्रता
ठीक है
परंतु
कुटिल से मित्रता
ठीक नहीं है,
क्योंकि
सर्प तो
एक बार डसता है
मगर
कुटिल व्यक्ति
पद-पद पर डसता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब आपको
बड़ों से
कुछ माँगने का मौका मिले
तो उसे छोड़ना मत,
क्योंकि
बड़ों के द्वारा दी गई चीज़ें
अनमोल होती हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

यदि कोई अपनी
अच्छी वस्तु देकर
दोष पूर्ण वस्तु
लेने की इच्छा करे,
तो समझ लेना
उसकी वस्तु
आपसे अधिक दोष युक्त है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

शिष्टाचार कहता है कि
घर पर आया हुआ अतिथि
भले ही शत्रु क्यों न हो
पर
उसकी सेवा करनी चाहिये ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुष्टों की संगति के कारण
कई बार
उनके पाप कर्म
हमें भी भोगना पड़ते हैं;
इसलिये
दुष्टों से दूरी ही श्रेष्ठ है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप मित्र बनायें
तो 'छाया' जैसे बनाना,
क्योंकि
जीवन के
अच्छे-बुरे समय में
जैसे छाया कभी
साथ नहीं छोड़ती;
वैसे ही सच्चे मित्र
कभी भी साथ नहीं छोड़ते...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पड़ोसी
कितना ही कमज़ोर क्यों न हो,
पर उससे भी
बैर नहीं करना चाहिये,
आपके खराब समय में
वह कमज़ोर पड़ोसी भी
बलवान हो सकता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हो सके तो
बेसहारा को अपनाओ
उसे दुत्कारो मत,
जब आप
अपनाना सीखेंगे
और
दुत्कारना छोड़ेंगे
तभी आप
महान और प्रिय बन पायेंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीवन में
दोस्त तो होना चाहिये,
लेकिन दोस्ती
स्वार्थी से मत करना,
स्वार्थी से की गई दोस्ती
स्वयं के विनाश का कारण है;
इसलिये
स्वार्थी से दोस्ती नहीं
दूरी ही भली है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर
शत्रु कभी
आपकी तारीफ करे
तो उसे सुनकर
फूलना मत
हो सकता है
वह आपका
ध्यान भंग करना चाहता हो...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

संकट के काल में
शत्रु की सहायता कभी मत लेना,
क्योंकि
सहायता के बाद
आपके सर पर
नया संकट आ जायेगा
वह होगा आपके शत्रु का...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

राह चलते
किसी से भी
दोस्ती नहीं करनी चाहिये,
दोस्ती के पूर्व
परीक्षा आवश्यक है;
किसी ने ठीक ही कहा है-
आदमी की परीक्षा
बसने पर ही हो पाती है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सलाह
समझदार व्यक्ति से
लेना चाहिये,
क्योंकि
मूर्ख व्यक्ति की सलाह भी
मूर्खता भरी ही होती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बड़ों की
सलाह न मानने वाले
जब संकट में फँस जाते हैं
तब पश्चात्ताप करते हैं,
इसलिये
बड़े-बुजुर्गों की सीख
करोड़ों की संपत्ति से भी
अधिक मूल्यवान है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सलाह
उम्र देखकर नहीं
तर्जुबा देकर ली जाती है,
इसलिये
मुसीबत में
सबसे अच्छी सलाह
अनुभवी वृद्ध ही दे सकते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अकसर
आपसी झगड़ों का फायदा
कोई तीसरा ही उठा लेता है,
इसीलिये
झगड़ा न करें
समझौता करें;
फायदा और शांति
झगड़े में नहीं
समझौते में ही है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

वस्तु का सुंदर होना
महत्त्वपूर्ण नहीं है,
महत्त्वपूर्ण है
वस्तु की उपयोगिता,
ठीक ही है–
अगर वस्तु उपयोगी नहीं है
तो उसकी
सुंदरता का भी
कोई उपयोग नहीं है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो दूसरों का
बुरा सोचते हैं
उनके बारे में
कोई भी अच्छा नहीं सोचता,
यहाँ तक की
प्रभु भी उनकी
प्रार्थना नहीं सुनते,
क्योंकि
वे जानते हैं
अच्छा और बुरा कौन है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

लोग कई बार
लालच के कारण
अपना ही नुकसान कर बैठते हैं
प्राण भी गवाँ देते हैं,
इसलिये
लालच करना छोड़ो
लालच अच्छी नहीं
खराब बात है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दोस्ती
समान व्यक्ति के साथ करें,
दोस्त
अगर ताकतवर हुआ
तो वह कभी भी
आप पर हावी हो सकता है,
इसलिये
दुश्मनी हो या दोस्ती
बड़ी सोच समझकर ही करें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

चाहे चीटीं हो,
साँप हो,
या हो हाथी
प्रत्येक प्राणी की रक्षा करो;
क्योंकि
आपकी रक्षा तभी हो पायेगी
जब आप
दूसरों की रक्षा करेंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

छोटे लोग
बड़ों को भी
छोटा करने की
फिराक में रहते हैं,
इसलिये
हीन आचरण वाले पुरुषों से
दूर रहना चाहिये,
वे आपके आचरण को
आपके विचारों को
हीन करने का प्रयास
अवश्य करते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने काम को
स्वयं अंजाम देने का प्रयास करें;
क्योंकि
भाग्य भी
उन्हीं लोगों पर प्रसन्न रहता है,
जो दूसरों से
सहायता लेने की अपेक्षा
स्वयं की सहायता करने में
विश्वास रखते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज्ञान की कीमत
धन से कई गुनी अधिक है,
धन तो
अल्प समय तक ही रहता है;
परंतु
ज्ञान रूपी धन
सदा आपके साथ रहता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

रास्ता वही चुनो
जो कठिन हो,
क्योंकि
कठिन रास्तों पर चलने से
बड़ी कामयाबी मिलती है
और
उस कामयाबी की गंध
दूर-दूर तक फैलती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पैसों को
खर्च करने के साथ-साथ
उन्हें बचायें भी,
क्योंकि
बचाया गया पैसा भी
एक प्रकार से
आपकी कमाई ही है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पहले के ज़माने में
सेवक बेकार घूमते थे
और
सेठ 'कार' में;
आज के ज़माने में
सेठ 'बेकार' घूमते हैं
और
सेवक 'कार' में ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो लोग
अपना ध्यान रखते हैं,
परंतु
सहयोगी को भूल जाते हैं,
वो लोग
किसी से भी
सहयोग की उम्मीदें न करें,
क्योंकि
जैसा व्यवहार आप जमा करेंगे
वैसा ही तो मिलेगा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर कोई चीज़
आपके लिये
जरूरी नहीं हो
तो उसे छोड़ दें,
हो सकता है
कोई जरूरतमंद उसके लिये
परेशान हो रहा हो...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी का दिल और विश्वास
कभी मत तोड़ना
क्योंकि
टूटा दिल
और
टूटा विश्वास
किसी भी गोंद से नहीं जुड़ता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर